



3, 71, 438

प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली  
मानद की एकाग्रता वाला पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक  
**देवपुत्र**



## भोली की भौंरैया

बड़ी सलोनी एक चिरैया  
भोली-भोली सी गौरैया ।  
कभी किचन में  
कभी मुँडरे,  
बैठ-बैठ कर  
रोज सवेरे  
चीं-चीं-चीं-चीं बोल-बोल कर  
मुझे जगाती जागो भैया !  
धीरे -से-  
आंगन में आती,  
दाने चुन-चुन  
कर उड़ जाती -  
नाच थिरक खिड़की के ऊपर  
करने लगती -ता-ता थैया ।  
नीबू की डाली-डाली पर,  
गेहूँ की सुन्दर  
बाली-पर  
गाती मीठे-मीठे स्वर में  
फुदक-फुदक कर छंद सवैया ।

देवपुत्र

## छोटे परदे पर

यह है अपना टी.वी., इसके छोटे परदे पर  
कभी दिखाई देते जंगल, कभी दिखाई देते खेत  
कभी दिखता बड़ा मरुस्थल, दूर-दूर तक फैली रेत ।  
कभी समंदर लहराता है, नदिया बहती है हर-हर ।  
मुँह फैलाए खड़ा सामने, शेर कभी गुराता है,  
आगे बढ़ता नभ, तब लगता, पास हमारे आता है ।  
यह डरावना दृश्य देखकर, हम तो सहसा जाते डर ।  
पेड़ों की शाखाओं पर फिर, चिड़ियाँ चूँ-चूँ करती हैं,  
उड़ उड़ कर वे नील गगन में, हम सब का मन हरती हैं ।  
देख-देख टी.वी. पर यह सब, मन खुशियों से जाता भर ।

